Bihar Board Class 7 Social Science History Notes
Chapter 8 क्षेत्रीय संस्कृतियों का उत्कर्ष

क्षेत्रीय संस्कृतियों का उत्कर्ष

पाठ का सार संक्षेप

गुप्त साम्राज्य के विघटन के फलस्वरूप छठी शताब्दी में क्षेत्रीय शासकों को पनपने का मौका मिला। इनमें प्रमख थे पाल, गर्जर प्रतिहार, राष्ट्रकूट, पल्लव, चोल आदि । क्षेत्रीयता के साथ ही इस काल को साहित्य, चित्रकला, संगीत में भी महत्त्वपूर्ण परिवर्तन आया । फलतः उत्तर भारत में जहाँ बंगला, असमिया, मैथिली, भोजपुरी, उड़िया तथा अवधि के साथ-साथ ब्रज भाषा का भी विकास हुआ । दक्षिण भारत में तमिल और मलयालम भाषाएँ विकसित हुई । आगे आने वाली शताब्दियों में हिन्दी और उर्दू भाषाओं के विकास के साथ-साथ इन भाषाओं के साहित्य का भी भंडार भरा । इस काल में भाषा के साथ चित्रकला और संगीत कलाएँ भी विकसित हुईं।

क्षेत्रीय भाषाओं की उत्पत्ति लगभग आठवीं से दसवीं शताब्दी के बीच हुई। कई राज्यों में संस्कृत के साथ-साथ तमिल, कन्नड़ एवं मराठी का प्रयोग प्रशासन में किया जाता था । विजयनगर राज्य में तेलुगु विकसित हुआ तो बहमनी राज्य में मराठी का विकास हुआ। इन भाषाओं के विकास में मुस्लिम शासकों ने भी सहयोग दिया । बंगाल के शासक नुशरतशाहा ने 'रामायण' और 'महाभारत' का बंगला में अनुवाद कराया ।

दिल्ली के शासकों ने भी हिन्दी, उर्दू, बंगला जैसी अन्य क्षेत्रीय भाषाओं को पहचान दिलाने का काम किया । आम लोग अपने-अपने क्षेत्र की क्षेत्रीय भाषाओं का व्यवहार करते रहे, जिन्हें अपभ्रंश कहते हैं । इसी अपभ्रंश से हिन्दी, उर्दू, पंजाबी, बंगला आदि भाषाओं की उत्पत्ति हुई थी । उर्दू एक मिश्रित भाषा है, जिसमें अरबी, फारसी, तुर्की के शब्द शामिल हैं । उर्दू की लिपि फारसी है, लेकिन व्याकरण हिन्दी जैसा ही है।

उर्दू भाषा का विकास ग्यारहवीं शताब्दी से शरू हुआ । विभिन्न भाषा / बोलने वाले सैनिक आपसी बातचीत में जिस भाषा का प्रयोग करते थे वही भाषा उर्दू कहलाई । 'उर्दू' का शाब्दिक अर्थ है 'शिविर' या 'खेमा' । सूफी संतों ने धर्म प्रचार के क्रम में वहीं के लोगों जैसा बोलना चाहते थे, लेकिन अपनी अंतरंग भावना को व्यक्त करते हुए उन्हें अपनी मातृभाषा का व्यवहार करना पड़ता था । फलतः स्थानीय भाषाओं में फारसी, अरबी, तुर्की के शब्द प्रवेश करते गये। आज ही हिन्दी बिना इन शब्दों के व्यवहार के लिखी ही नहीं जा सकती । हिन्दी वाले भी इसके इतने निकट हो गए हैं कि उर्दू के शब्द भी उन्हें हिन्दी ही लगते हैं। केवल बंगला भाषा है. जिसमें विशद्ध संस्कृत

शब्द का व्यवहार होता है, जिसे बंगलादेश के मुसलमान भी व्यवहार में
लाते हैं। तात्पर्य कि सूफी संतों के कारण भी उर्दू एक भाषा के रूप में
जानी जाने

लगी । चौदहवीं शताब्दी में अमीर खुसरो ने इस भाषा को उर्दू न कहकर रेख्ता' या 'हिन्दवी' नाम दिया । इसी भाषा में उन्होंने अपनी काव्य रचनाएँ । की थीं । उनके काव्य का एक नमूना है :

गोरी सोये सेजपर, मुख पर डाले केश । जल खुसरो घर आपनो, रैन भई चाहूँ देश ।

https://www.evidyarthi.in/

दक्षिण भारत में जिस उर्दू का विकास हआ वह 'दक्कनी' कहलाई । अठारहवीं शताब्दी के अंत तक उर्दू को 'दक्कनी', हिन्दवी, हिन्दुस्थानी कहा जाता रहा । मुगल काल में उर्दू मुगलों की मातभाषा बन गई।

'हिन्दी', 'हिन्द', 'हिन्दवी' और हिन्दुस्तान आदि शब्दों की उत्पत्ति का कारण उत्तर-पश्चिम में बनने वाली नदी 'सिंध' थी । समकालीन लौकिक हिन्दी साहित्य के अमर कति अमीर खुसरो हैं। इनकी पहेलियाँ बहुत प्रसिद्ध हुई । गद्य साहित्य में इतिहास की प्रमुखता रही । जियाउद्दीन बरनी, अधीक, इसानी आदि इस युग के प्रसिद्ध इतिहासकार थे । जिया नक्शवी ने 'तुतीनामा' लिखा, जिसमें एक तोता एक विरहिणी नायिका को कथा सुनाता है । यह कहानी मूलतः संस्कृत में थी, जिमका नक्शवी ने फारसी में अनुवाद किया।

अकबर के काल में साहित्यिक विकास शिखर पर था । अब्दुल रहीम खान खाना, जिन्हें 'रहीम' के नाम से जानते हैं, अकबरी दरबार के नवरत्नों में थे । ये कृष्ण भक्त थे और उन्हीं के गुणगान में रचना की । तुलसीदास, सूरदास, मीराबाई आदि इसी काल के कवि थे । तुलसी दास ने अवधि में रामचरित मानस लिखा तो सूरदास ने ब्रजभाषा में सूरसागर लिखा । मीराबाई भी कृष्ण भक्त थीं जिन्होंने राजस्थानी में कृष्ण के गीत गाये ।

मुगलों ने मानां भारत में चित्रकला की नींव ही रख दी । मुगल दरबार में चित्रकारों का बहुत मान था । इस काल का एक चित्र संग्रह है 'हज्जानाम', जिसमें 1200 चित्र हैं । जसवंत तथा दसावन गुगल दरबार के प्रसिद्ध चित्रकार थे । औरंगजेब के काल में चित्रकला का पतन हो गया। चित्रकार अब छोटे-छोटे क्षेत्रीय राजाओं के शरण में चले गये । वे दिल्ली से चलकर जौनपुर, लखनऊ, पटना और मुर्शिदाबाद तक फैल गये । वहाँ के नवाबों. सुबेदारों से उन्हें संरक्षण मिला। पटना में जो चित्रकला विकसित हुई उसे 'पटना कलम' कहा गया । सल्तनत काल से ही संगीत का विकास शुरू हो चुका था जो आज तक जारी है ।

अकबर के दरबार में एक-से-एक शास्त्रीय गायक थे। तानसेन अकबर के नवरत्नों में थे । दरगाहों में कव्वाली का विकास हुआ वहाँ अमीर-उमरा लोगों में गजल को प्रोत्साहित किरण । बिहार भी संगीत से अछूता नहीं था । यहाँ पटना, गया, आरा, छपरा आदि शहर संगीत के प्रमुख क्षेत्र थे। लखनऊ और बनारस के गायक पटना में आकर बस गये । गजल, दादरा, जरी, चैता, ख्याल, टुमरी आदि का विशेष विकास हुआ।

https://www.evidyarthi.in/